स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम

भारतीय दर्शन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

(Post Graduate Diploma in Bharatiya Darshan)

(PGDBD)

कार्यक्रम-दर्शिका

Programme Guide

मानविकी विद्यापीठ
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-110068

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

भारतीय दर्शन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

(Post Graduate Diploma in Bharatiya Darshan)

(PGDBD)

1. प्रस्तावना

"भारतीय दर्शन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा" कार्यक्रम का उद्देश्य अध्येताओं को भारतीय दार्शनिक परम्परा की गहराई, विविधता और उसके आधुनिक अनुप्रयोगों से परिचित कराना है। यह कार्यक्रम भारतीय चिंतन की आस्तिक और नास्तिक दोनों धाराओं का समग्र अध्ययन प्रस्तुत करता है, जिससे अध्येता भारतीय दर्शन की व्यापक बौद्धिक परम्परा को समझ सकें। प्रारम्भिक अध्ययन में दर्शन शब्द की व्युत्पत्ति, भारतीय दर्शन की उत्पत्ति और विकास, आस्तिक एवं नास्तिक परम्पराओं का स्वरूप तथा मोक्ष की अवधारणा का विवेचन किया गया है। इसमें आस्तिक दर्शनों - सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त का विस्तारपूर्वक अध्ययन कराया गया है। साथ ही नास्तिक दर्शनों - चार्वाक, बौद्ध और जैन दर्शन के प्रमुख सिद्धान्तों और तर्कपद्धतियों का तुलनात्मक विश्लेषण भी सम्मिलित है। इनके अतिरिक्त शैव, शाक्त एवं वैष्णव दर्शन के स्वरूप एवं परिचय से भी अवगत कराया गया है। पाश्चात्य दर्शन से तुलनात्मक दृष्टि भी इसका महत्त्वपूर्ण पक्ष है। कार्यक्रम के मध्य भाग में भारतीय दर्शन की प्रमुख अवधारणाएँ जैसे - नैतिकता (आचार और मूल्यमीमांसा), ज्ञानमीमांसा (प्रमाणवाद, ख्यातिवाद), सौन्दर्यमीमांसा, भाषा-दर्शन, आत्मा और मोक्ष का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इसमें भारतीय और पाश्चात्य सौन्दर्यशास्त्र की तुलनात्मक समीक्षा भी सम्मिलित है।

इस कार्यक्रम में भारतीय आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परम्पराओं का विवेचन किया गया है - जैसे भक्ति, आगम, नाथ और सिख परम्पराएँ, जिनके माध्यम से भारतीय धार्मिक और दार्शनिक जीवन के विविध आयामों को समझाया गया है। इसके अतिरिक्त, आधुनिक भारतीय दार्शनिकों - स्वामी विवेकानन्द, महर्षि अरविन्द, स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचारों का अध्ययन कराया गया है। साथ ही भारतीय और पाश्चात्य दर्शन के साम्य और वैषम्य की समीक्षा तथा भारतीय दर्शन की समकालीन समस्याओं पर विमर्श भी सम्मिलित है।

यह कार्यक्रम दर्शन का अध्ययन कर रहे विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी है, क्योंकि आमतौर पर बी.ए या एम.ए दर्शन पाठ्यक्रम में पाश्चात्य दर्शन के अध्ययन पर अधिक विस्तार दिया जाता है, जबकि भारतीय दर्शन के अध्ययन को कम प्राथमिकता दी जाती है। अतः भारतीय दर्शन के दृष्टिकोण से यह कार्यक्रम सम्पूर्ण भारत एवं विश्व में दर्शन के विद्यार्थियों को विशेष लाभ प्रदान करेगा।

यह कार्यक्रम **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020)** की भावना के अनुरूप है, जिसमें भारतीय ज्ञान परंपरा, भारतीय भाषाओं और स्थानीय बौद्धिक परम्पराओं के पुनरुद्धार पर विशेष बल दिया गया है। NEP 2020 इस बात पर ज़ोर

देती है कि शिक्षा केवल रोजगारपरक ही नहीं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक और दार्शनिक मूल्यों पर आधारित हो। इसी दृष्टि से यह कार्यक्रम अत्यंत उपयोगी है क्योंकि वर्तमान में समाज अपनी जड़ों की ओर लौटते हुए अपनी प्राचीन ज्ञान-परंपरा में निहित ज्ञान के अध्ययन में पुनः सक्रिय हुआ है।

2. प्रवेश के लिए योग्यता

मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से किसी भी विषय में स्नातक अथवा उच्चतर उपाधि ।

3. कार्यक्रम अवधि

न्यूनतम 1 वर्ष और अधिकतम 3 वर्ष।

4. शुल्क विवरण

6700/- रु. पूरे कार्यक्रम के लिए।

5. शिक्षण माध्यम

हिन्दी।

6. क्रेडिट पद्धति

भारतीय दर्शन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम में अध्ययन हेतु क्रेडिट पद्धति अपनाई गई है। 1 वर्ष के इस कार्यक्रम के लिए 40 क्रेडिट का पाठ्यक्रम निर्धारित किया गया है।

7. कार्यक्रम संरचना

पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	क्रेडिट
MSK-031	भारतीय दर्शन: स्वरूप, अवधारणा एवं अनुप्रयोग	8
MSK-032	न्याय, वैशेषिक एवं चार्वाक दर्शन: स्वरूप एवं परिचय	8
MSK-033	सांख्य, योग एवं बौद्ध दर्शन: स्वरूप एवं परिचय	8
MSK-034	मीमांसा, वेदान्त एवं जैन दर्शन: स्वरूप एवं परिचय	8
MSK-035	शैव, शाक्त एवं वैष्णव दर्शन: स्वरूप एवं परिचय	8

8. शिक्षण प्रविधि

भारतीय दर्शन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम की शिक्षण प्रणाली छात्रोन्मुखी शिक्षा पद्धति पर आधारित है। इस कार्यक्रम में शिक्षण हेतु निम्नलिखित माध्यमों का प्रयोग किया जाएगा:

- **मुद्रित सामग्री –**

भारतीय दर्शन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम की मुख्य सामग्री मुद्रित रूप में भेजी जाएगी, साथ ही पाठ्यक्रम सामग्री ऑनलाइन रूप में ई-ज्ञानकोश की वेबसाइट के माध्यम से उपलब्ध कराई जाएगी। निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार विषय के प्रतिष्ठित विद्वानों द्वारा लिखे गए पाठों को विभिन्न पुस्तकों के रूप में मुद्रित कर स्व-अध्ययन सामग्री के रूप में उपलब्ध कराया जाएगा। प्रत्येक इकाई की रूपरेखा इस तरह से तैयार की गई है कि वह आपके अध्ययन में सहायक सिद्ध हो। इन इकाइयों में क्रम से उद्देश्य, प्रस्तावना, मुख्य भाग, सारांश और अंत में अभ्यास प्रश्न दिए गए है। इकाई का एकाग्रतापूर्वक अध्ययन कीजिए और मुद्रित पृष्ठों की खाली जगहों का नोट्स लेने के लिए आवश्यकतानुसार उपयोग कीजिए विषय से संबंधित सभी बिन्दुओं को सरल रूप में इकाई में समझाया गया है जिससे आपको किसी तरह की कोई कठिनाई न हो। फिर भी यदि किसी बिन्दु पर आपको कोई कठिनाई हो तो आप स्पष्टीकरण के लिए अपने अध्ययन केन्द्र के परामर्श सत्रों का उपयोग कर सकते हैं।

- **ऑडियो/वीडियो व्याख्यान –**

अनुपूरक अध्ययन सामग्री के रूप में विश्वविद्यालय ऑडियो और वीडियो कार्यक्रमों का निर्माण करता है, जो अध्ययन केन्द्रों के परामर्श सत्रों, ज्ञान दर्शन, ज्ञान वाणी चैनल और ई-ज्ञानकोश पर उपलब्ध है। इनका उपयोग आपके अध्ययन के क्षितिज को विस्तृत करेगा।

- **परामर्श सत्र –**

विश्वविद्यालय के अध्ययन केन्द्रों द्वारा आयोजित किए जाने वाले परामर्श सत्र विद्यार्थियों के मार्गदर्शन और समस्याओं के समाधान के लिए अत्यंत उपयोगी है। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय के मुख्यालय, नई दिल्ली स्थित संचार केन्द्र (ई.एम.पी.सी.) द्वारा टेलीकॉन्फ्रेंसिंग, एडुसेट, ज्ञान दर्शन और रेडियो चैनल ज्ञान वाणी के माध्यम से भी परामर्श सत्र आयोजित किए जाएंगे, जहाँ आप टेलीफोन / ईमेल द्वारा उपस्थित अध्यापक / विशेषज्ञ से संवाद कर सकते हैं और अपने प्रश्न पूछ सकते हैं।

9. परीक्षा योजना

विद्यार्थियों का मूल्यांकन दो प्रकार से किया जाता है:

- **सत्रीय कार्य के द्वारा सतत मूल्यांकन**

इग्नू द्वारा अपने शिक्षण कार्यक्रमों के लिए सतत मूल्यांकन पद्धति को अपनाया गया है। प्रत्येक शिक्षण सत्र में निर्धारित सत्रीय कार्य और सत्रांत परीक्षा के माध्यम से सतत मूल्यांकन किया जाता है। सत्रीय कार्य के लिए 30 प्रतिशत और सत्रांत परीक्षाओं के लिए 70 प्रतिशत अंक निर्धारित किए गए है। सत्रीय कार्य में आप जो अंक प्राप्त करेंगे उसे आपके परीक्षाफल के अंकों में जोड़ दिया जाएगा। यह सत्रीय कार्य निर्धारित समय पर इग्नू की वेबसाइट पर उपलब्ध करा दिया जाएगा, जहां से प्राप्त करके दिए गए प्रारूप में उसे तैयार कर अपने अध्ययन केंद्रों पर जमा कर सकते हैं।

- **सत्रांत परीक्षा**

सत्रांत परीक्षा मूल्यांकन पद्धति का अभिन्न अंग है। सत्रीय कार्य के लिए 30 प्रतिशत और सत्रांत परीक्षाओं के लिए 70 प्रतिशत अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रांत परीक्षा में बैठने के लिए विद्यार्थियों को पहले अपने सत्रीय कार्य जमा करना अनिवार्य है।

कार्यक्रम समन्वयक

डॉ. आशीष कुमार, सहायक आचार्य, संस्कृत संकाय, मानविकी विद्यापीठ,

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

ई-मेल : asheeshkr@ignou.ac.in

संपर्क : +91 9654079380

प्रवेश हेतु और अधिक जानकारी के लिए अधोलिखित लिंक का प्रयोग करें :

www.ignou.ac.in